Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue VII, July-2012, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

डॉ. महेन्द्र भटनागर के काव्य में समसामयिकता

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue VII, July-2012, ISSN 2230-7540

डॉ. महेन्द्र भटनागर के काव्य में समसामयिकता

Rimpy

Research Scholar, Singhania University Jhunjhunu, Rajasthan, India

1. कवि :

कवि के लिए संस्कृत में कहा गया है कि –

अपारे काव्य–संसारे कवि रेक : प्रजापति।

अर्थात् कविता रूपि संसार का सर्जक कवि प्रजापति है। जिस तरह ब्रह्मा संसार का निर्माण करता है उसी तरह कविता रूपि संसार का निर्माण कवि करता है। कवि के लिए यह स्पष्ट बात है कि अन्य की तुलना में वह अधिक संवेदनशील होता है। यही भावुकता उसे कवि–कर्म के लिए प्रेरित करती है। कवि सुमित्रानंदन पंत कहते हैं –

''वियोगी होगा पहला कवि,

आह से उपजा होगा गान :,

उमड़कर आँखों से चुपचाप

बही होगी कविता अनजान !

संस्कृत में कवि के लिए कहा गया है कि –

नर त्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा ।

कवि त्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ।।

यानी इस संसार में मनुष्य होना दुर्लभ बात है, उसमें भी विद्वान बनना और विद्वता के साथ कवि होना और काव्य की रचना करना और भी दुर्लभ है।

कवि शब्द का अर्थ 'प्रजापति', 'ब्रह्मा' व 'काव्य करने वाला' है।'' 'कवि' शब्द फर्वेण अथवा 'कुड्शब्दे' धातु से 'ई' प्रत्यय लगाने से बनता है। राजशेखर कवि का अर्थ 'वर्णनकर्ता' मानते हैं। संस्कृत आलोचना में कवि का प्रधान कार्य 'वर्णन' बताया गया है। मम्मट के अनुसार 'काव्य' लोकोत्तर वर्णना में निपुण कवि का कर्म है।

'लोकोत्तर वर्णना–निपुण कवि–कर्म ।'

कविता रचने वाले को कवि कहा गया है। 'कवि' किसी वस्तु का वर्णन मात्र कर देने से संतुष्ट नहीं होता, वह उसमें लोकोत्तर भावों का भी समावेश करता है। जो अपनी प्रतिभा चक्षु से अनुभूत सत्य को सुन्दर शब्दों में प्रकट नहीं कर पाता वह कवि नहीं हो सकता।

कवि–कर्म के लिए प्रतिभा का होना आवश्यक है। वह अपनी प्रतिभा से इच्छानुसार भावों का प्रस्फुटन करता है। इसलिए उसे प्रजापति कहा जाता है।

संसार में हर जीव कोई–न–कोई कर्म में प्रवृत रहता है। मूर्ख व्यक्ति भी बिना प्रयोजन के कार्य नहीं करता तो एक कवि बिना प्रयोजन काव्य करने में कैसे निवृत्त होगा ? कवि अपनी कविता का सृजन कोई–न–कोई प्रेरणा प्राप्त करके ही करता है। तुलसी की तरह कोई स्वान्तःसुखाय करता है तो कोई वाल्मिकी की तरह क्रौंच–वध से द्रवित होकर।

आधुनिक हिन्दी साहित्य पर 'फ्रॉयड', 'एडलर' और 'युंग' का काफी प्रभाव है। आधुनिक कविता ने पूर्व से अधिक, पश्चिम से प्रभाव ग्रहण किया है। प्रगतिवाद इसका प्रमाण है। मार्क्सवादी विचारधारा ने पूर्व काव्य प्रभावित हुआ। मार्क्सवाद, एक समग्र जीवन–दर्शन है – समाज–व्यवस्था है जो समाज को दो वर्गों के रूप में देखता है – शोषक–शोषित। शोषक–वर्ग सर्वहारा वर्ग का शोषण करता है। आधुनिक काल में इसके विरोध का स्वर मुखर हुआ। जिसका श्रेय मार्क्सवाद को जाता है। समाजवादी विचार भारतीय स्वाधीनता संग्राम को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण कारण रहा है। समाजवादी विचार रूसी क्रांति से आया। इस विचार ने भारत को स्वतंत्र होने में बल प्रदान किया। समाजवादी विचार ने राजनीति के साथ–साथ समाजार्थिक संरचना, कला–साहित्य, संस्कृत को भी प्रभावित किया।

2. युगधर्म :

''युगधर्म यानी समय के अनुसार व्यवहार।'' जैसा कि सर्वविदित है 'साहित्य समाज का दर्पण है।' इस दर्पण में चित्र अंकित करने का दुष्कर कार्य साहित्यकार ही कर सकता है। हर बड़े रचनाकार की रचना में उसका युग, समय और परिवेश संजीदगी के साथ उपस्थित रहता है। उसका साहित्य शुद्ध साहित्य न होकर अपने समाज का इतिहास भी होता है।

'तारसप्तक' और 'सप्तक' द्वितीय, तृतीय प्रकाशन के बाद प्रगतिवाद को झटका लगा। इसका कारण था, प्रगतिवाद को व्यक्ति–विरोधी घोषित किया जाना। कवि महेन्द्र भटनागर ने प्रगतिवाद की घनिष्ठा को पुनः स्थापित किया। कवि महेन्द्र भटनागर ने 'व्यष्टि' से 'समष्टि' को काव्य में चित्रित किया, साथ ही अपनी रचनाओं के माध्यम से यह प्रमाणित किया कि प्रगतिवाद स्वस्थ परम्पराओं का विरोध नहीं करता। कवि महेन्द्र भटनागर ने कविता को 'नारे बाजी' से भी बचाया। भाषा, छंद, प्रतीक तथा बिम्बों के नये प्रयोगों द्वारा प्रगतिशील कविता को समृद्ध किया। उन्होंने अनेक प्रकार के प्रयोग अपनी कविता में किये हैं। उनके काव्य में विविधता है, जो पूर्ववर्ती प्रगतिशील

www.ignited.in

कवियों में देखने को नहीं मिलती। उन्होंने प्रयोगवाद के चमत्कारिक स्वरूप का विरोध किया है। डॉ. महेन्द्र भटनागर के शब्दों में – ''आज की कविता 'प्रगति' और 'प्रयोग' के दृष्टिकोण से देखी जाती है। मैं प्रयोग करता हूँ, लेकिन प्रयोग से मेरा अभिप्राय प्रयोगवादियों से भिन्न है, जो प्रयोग के चमत्कारिक प्रदर्शनों से साहित्य की जनवादी विचारधारा को दबा रहे हैं। प्रयोगों का समाजिक संबंध होना अनिवार्य है। प्रगतिशील दृष्टिकोण से जन–जीवन के भावों की अभिव्यक्ति यदि नाना रूपों में की जाती है तो यह एक स्वस्थ और जीवनदायी परम्परा कही जाएगी। मैं यह देख रहा हूँ कि हिन्दी के अनेक प्रगतिशील जनवादी कवियों में आज वह तेजी नहीं रही जो पहले थी। उनमें से बहुत से प्रयोग–शैली के भँवर में फँसकर जनवादी परम्पराओं से दूर होते जा रहे हैं। उनकी कविताएँ दुरूह, कलाहीन और अप्रभावशाली होती जा रही हैं। मैं जहाँ कविता में नये–नये प्रयोगों का समर्थक हूँ, वहाँ दूसरी ओर उसके विचार–पक्ष में प्रगतिशील–दर्शन की छाया भी देखना चाहता हूँ – तभी कविता राष्ट्रीय तथा सामाजिक चेतना दे सकेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। अन्यथा, वह थोड़े–से व्यक्तियों की चीज बनकर रह जाएगी और स्त्रष्टा युगधर्म निभाने में असफल रहेगा।''

कवि भावना और कल्पनालोक का चितेरा होता है। तुच्छ साधारण तथा नीरस से नीरस वस्तु को भी अपनी कारयित्री प्रतिभा के माध्यम से सरस, सजीव तथा आकर्षक बना देता है। कुछ ऐसी ही विशेषता कवि महेन्द्र भटनागर में भी है। वे युग–कवि हैं। उनकी मानवतावादी दृष्टि सम्पूर्ण समष्टि का हित चाहती है। उनकी जग विस्तृत भावना उन्हें नई–नई संवेदनाओं को उजागर करने के लिए प्रेरित करती हैं।

धार्मिक परिवेश :

19 वीं सदी में ब्रिटिश सत्ता ने भारतीय शासन को अपने हाथ लेकर धार्मिक परिवर्तन का श्री गणेश किया। गोरों ने भारत में ईसाई धर्म के प्रचार के लिए बाइबिल का अनुवाद यहाँ की भाषा में करवाया। भारत की गरीब और लाचार प्रजा को दमन व पैसों के बलबूते पर धर्म–परिवर्तन करवाना शुरू किया। अंग्रेजों ने अपने इस कार्य को सिद्ध करने के लिए 'थियोसोफ़ीकल सोसायटी' की स्थापना की। इस समय भारतीय प्रजा में कई कुरीतियाँ और रूढ़ियाँ विद्यमान थीं, जो जन–मानस को तोड़ने में सक्रिय थीं, इनमें मूर्तिपूजा व जातिभेद प्रमुख हैं।

अंग्रेजी साहित्य से प्रभावित होकर, भारतीय बुद्धिजीवी लोगों ने इन रूढ़ियों से भारतीय समाज को बाहर निकालने के अथाह प्रयत्न किए। इस नवजागरण की शुरूआत बंगाल के राजा राममोहन राय ने 'ब्रह्म समाज' की स्थापना से की। यह संस्थान पूर्णतः भारतीय धर्म व उसके विस्तार पर आधारित था। हिन्दू धर्म में एकेश्वरवाद और सामाजिक क्षेत्र में स्त्री–सम्मान को महत्व दिया जाना चाहिए, जैसे विचारों को बल दिया गया। राजा राममोहन राय ने 'सतीप्रथा' को, कम्पनी सरकार की मदद से, निषिद्ध घोषित करवाया। साथ ही, मूर्ति–पूजा व जाति–वाद का विरोध भी हुआ, जिसे ठाकुर देवेन्द्रनाथ, केशवचन्द्र सेन जैसे महारथियों ने जनांदोलन का रूप देकर आगे बढ़ाया।

सन् 1940 में महात्मा गाँधी ने सीमित व्यक्तिगत सत्याग्रह आरंभ किया। यह आन्दोलन बड़ा असरकारक हुआ। ब्रिटिश सरकार ने इस आन्दोलन को दबाने के लिए करीब ''25000'' व्यक्तियों को जेल भेज दिया। यह युग भारतीय स्वाधीनता संग्राम का अंतिम चरण और स्वतंत्रता–प्राप्ति का ऊषाकाल थी। 'भारत छोड़ो' आन्दोलन का प्रखर ताप, पूरे भारतीय उपमहाद्वीप को उग्र बना रहा था। यह परिवेश जन–मानस को आरपार की लड़ाई के लिए प्रेरित कर रहा था। यह काल संघर्ष का निर्णायक चरण था तो दूसरी ओर अनेक गाँधीवादी मूल्यों के ह्रास का साक्षी भी था। हिन्दू–मुस्लिम एकता और भ्रातृभाव, अहिंसा, सौहार्द आदि मानवीय मूल्य राजनीतिक स्वार्थों के समक्ष धराशायी होने लगे थे। ''मो. अली जिन्ना ने 1940 में मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में कहा कि हिन्दू धर्म और इस्लाम शाब्दिक अर्थ में धर्म नहीं हैं प्रत्युत दो सामाजिक व्यवस्थाएँ हैं। हिन्दू और मुसलमान कभी संयुक्त राष्ट्र के रूप में नहीं रह सकते।''

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में आजाद हिन्द फौज का क्रांतिकारी सहयोग रहा। हाँलांकि सुभाषचन्द्र बोस के विचार गाँधीजी की विचारधारा से नहीं मिलते थे। देश में क्रांतिकारी माहौल बनाने में सुभाषचंद्र बोस का आह्वान महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। इसी से प्रेरणा पाकर 1944 में बम्बई में नौ सेना विद्रोह हुआ। नौ सेना के विद्रोह ने भी सरकार के हाथ पाँव फुला दिये। इस विद्रोह को कवि ने अपनी कविता में वाणी दी है :

''नौसैनिक चले मिलकर जहाजों को उड़ाने को,

भीषण गोलियाँ बरसी गुलामी को मिटाने को ।

× × × × × × ×

कवि महेन्द्र भटनागर ने अपने कवि को पूर्णतः स्वातंत्रय सेनानी बना दिया है। गाँधीजी के देश–व्यापी आन्दोलन ने उन्हें अत्यधिक प्रभावित किया। 'जलो–जलो' कविता में वह यही बात कहता है। यथा :

संघर्षों की ज्वाला में जलो–जलो !

बलिदान–त्यागमय जीवन हो,

कारागृह की शांति–सदन हो,

गाँधीजी के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन को दबाने के लिए ब्रिटिश सरकार ने ''1942 को गाँधीजी तथा काँग्रेस कार्यसमिति के अन्य सदस्य गिरफ्तार कर लिए गए। नेताओं की आकस्मिक गिरफ्तारी से जनता भड़क उठी और सारे देश में आन्दोलन आरम्भ हो गया। कई स्थानों पर आन्दोलन अहिंसक न रह सका। यह अब तक देश का सबसे बड़ा आंदोलन था।'' कवि महेन्द्र भटनागर की कविता में इस आन्दोलन का धुँआ देखने मिलता है। 'बलिपंथी' का कवि गाता है –

''हम कब पथ में रूकते हैं ?

परिणामों की परवाह न, हम तो कर्मों में तत्पर

पल–पल का उपयोग यहाँ, खोने पाये कब अवसर ?''

डॉ. महेन्द्र भटनागर के साहित्य–सृजन का प्रारम्भ स्वातंत्रयपूर्व से हुआ, जो स्वतंत्रता के बाद से अद्यतन गतिशील है।

''15 अगस्त, 1947 भारतीय इतिहास में ही नहीं, विश्व–इतिहास का एक महत्वपूर्ण दिन है। इस दिन, करीब 200 सालों की

www.ignited.in

अंग्रेजों की अधीनता से भारत स्वतंत्र हुआ और उसे अपने हाथों अपनी नियति बनाने–संवारने का सुअवसर मिला। भारत की यह आजादी अपने आप में निराली थी। देश ने गाँधीजी के नेतृत्व में अहिंसात्मक रीति से सत्याग्रह द्वारा स्वतंत्रता प्राप्त की थी। संसार के इतिहास में विरोधी से लड़ने का यह अनोखा अस्त्र था। इतिहास का सबसे ताक़तवर साम्राज्य हँसते–हँसते विदा ले गया।''

वर्तमान राजनीति मात्र धर्म, जाति, मनी पावर व मसल्स पावर के आधार पर चल रही है। देश के सामने आज भी कई राजनीतिक मामले ऐसे हैं जिनका कोई हल नहीं हो पा रहा है। जिनमें प्रमुख समस्या राम–जन्मभूमि की है। जो हिन्दुत्व से जड़ी है। बाबरी ध्वंस पर धर्म के नाम पर दंगे हुए। साम्राज्यवादी ताकतें आज भी जम्मू–कश्मीर की बर्फीली चट्टानों को लहू से रँग रही है। 'समझौता एक्सप्रेस' राजनीतिक समस्या का सबसे बड़ा प्रश्न–चिह्न है। फिर भी राजनीतिक गुरू अपने निजी स्वार्थ–सिद्धि के लिए देश की समाजवादी भावना की बलि चढ़ाते रहे हैं।

आर्थिक परिवेश :

डॉ. महेन्द्र भटनागर स्वतंत्रता–पूर्व व स्वातंत्रयोत्तर दो युग के कवि हैं। उन्होंने दोनों युग की परिस्थितियों का अनुभव किया है। उनके समय के आर्थिक परिवेश की जानकारी इस प्रकार है। पहले एक नज़र स्वातंत्रयत–पूर्व के आर्थिक परिवेश पर ''ब्रिटिश शासन ने भारतीय अर्थ–व्यवस्था को नष्ट कर दिया था। एक समय में 'सोने की चिड़िया' के नाम से जिसकी पहचान होती थी वह देश जर्जर हो गया। ढेरों आर्थिक समस्याएँ विरासत में मिलीं। सबसे अधिक अंग्रेजों ने भारत का शोषण किया। दो विश्वयुद्ध के कारण भारत को कई गुना नुक़सान भुगतना पड़ा। अंग्रेजों ने जाते–जाते भारत को दो भागों में विभाजित कर दिया। ''भारत को आर्थिक समृद्धि देने वाला भाग पाकिस्तान में चला गया।'' अन्यथा भी, भारत सरकार को पाकिस्तान सरकार को आर्थिक सहयोग अलग से देना पड़ा। जिससे भारत को आर्थिक झटका लगा।

''कृषि, भूमि, खान, खदान, नदियाँ और वन राष्ट्रीय संपत्ति के रूप हैं, जिनका स्वामित्व सामूहिक रूप से भारतीय जनता के हाथों में ही रहेगा। सहकारी नियम, सामूहिक और सरकारी फार्मों के विकास द्वारा भूमि को नाम में लाने के लिए प्रयोग किये जाएंगे। फिर भी, यह प्रस्ताव नहीं किया गया कि छोटी जोतों में किसान द्वारा खेती को समाप्त कर दिया जाए। किसी न किसी प्रकार से सामूहिक खेती शुरू करानी ही थी। लेकिन संक्रांति काल के समाप्त होने के बाद ताल्लुकेदार, जमींदार आदि जैसे बिचौलियों को मान्यता नहीं देनी थी, इन वर्गों के लोगों को जो अधिकार और खिताब दिये गये थे उन्हें उत्तरोत्तर खरीदना चाहिए। राज्य सरकारों को खेती योग्य बंजर भूमि में सामूहिक खेती शीघ्र ही प्रारंभ करानी थी। सहकारी खेती व्यक्तियों अथवा संयुक्त स्वामित्व के साथ सम्मिलित की जानी थी। विभिन्न प्रकार की खेती के लिए कुछ ढील भी देनी थी, ताकि अधिक अनुभव के साथ कुछ विशेष प्रकार की खेती को विकसित किया जाये तो अन्य प्रकार से अपेक्षाकृत अधिक प्रोत्साहन पा सके।'' इस वक्तव्य का सार इतना मात्र है कि अंग्रेजी ने भारत के कुटीर–उद्योग नष्ट कर दिये थे। ब्रिटिश सरकार के आर्थिक शोषण के फलस्वरूप भारत के लोगों की गरीबी बढ़ती गई। भारत को अनेक अकालों का सामना करना पड़ा, जिनमें लाखों–करोड़ों लोगों की जाने गई। 19वीं सदी के उत्तरार्ध में भारत में 24 अकाल पड़े, जिनमें प्रायः 3 करोड़ लोगों की मृत्यु हुई।

स्वतंत्र भारत की आर्थिक अधिकतर उपरोक्त परिस्थितियों से प्रभावित है। कवि महेन्द्र भटनागर ने अकाल के अभावग्रस्त दिनों का सामना किया है। वे कहते हैं कि – ''कितना बुरा समय था वह। तिस पर मालवा में अकाल पड़ा। गेहूँ नहीं मिलता था। चावल बहुत महँगा था। कंट्रोल के घुने–सड़े जौ और चने कुछ मिल पाते थे। अमरीकी मेलों नामक लाल अनाज खाया नहीं जाता था। बाद में तो, मूँग की दाल के चालों और पकौड़ियों पर दिन काटने पड़े। घर पर पढ़ने व्यापारियों के जो लड़के आते थे, वे पारिश्रमिक के बदले में थोड़ा–सा गेहूँ दे जाते थे। इस जीवन में मुझे बड़े कटु अनुभव हुए। एक विद्यालय के अध्यापक की यह जिन्दगी थी। कल्पना कीजिए, गरीब जनता को कितनी मुसीबतों का सामना करना पड़ा होगा। राशन की दुकाने लुट जाया करती थीं। लाठी–चार्ज होते–होते बचता था। इस माहौल में, व्यापारी, पूँजीपति और बड़े अफसर मस्त–अलमस्त घूमते थे। यह उनके धन कमाने का समय था। अभिप्राय यह है कि ये सारी घटनाएँ, एक–के–बाद–एक, मेरे मन में मौजूदा समाज–व्यवस्था के प्रति आक्रोश का भाव भरती गई। विद्रोह और क्रांति के भाव–विचार मेरी अपनी भोगी हुई जिन्दगी से उपजे हैं। मेरे प्रारंभिक लेखन का यह आर्थिक परिवेश था।''

सामाजिक परिवेश :

''भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन का यहाँ के जीवन और समाज पर असर जितना जटिल है, उसका रूप उतना ही बहुआयामी और बहुरंगी भी है। चाहे तो इसकी तुलना हम बीसवीं सदी के रूस और चीन के सामाजिक–राजनीतिक रूपान्तरण से कर सकते हैं। इस आन्दोलन ने भारत के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन को काफी गहराई तक प्रभावित किया था।''

महेन्द्र जी के काव्य में, शाश्वत सत्य पा कहें कि शाश्वत मूल्यों का महत्व अवश्य उपलब्ध है, किन्तु समसामयिक युग की उपेक्षा नहीं की गयी है। उन्होंने यह स्वीकार किया है कि सामयिकता की उपेक्षा करके कोई कवि समाज के लिए कल्याणकारी साहित्य का सृजन नहीं कर सकता। उन्होंने 'टूटती श्रृंखलाएँ' संग्रह की 'कला' शीर्षक कविता में यही स्वर फूँका है। यथा –

''जो सुदूर स्वप्न–राज्य की विहारिका

व्योम पार देश की रही निहारिका''

भारत में अंग्रेजों ने केवल उसका धन ही नहीं बल्कि उसकी संस्कृति, सभ्यता और धार्मिक सौहार्द को भी लूटा। धर्म की ऐसी भेद रेखा बनायी, जिससे भारतीय समाज आज भी आपस में लड़ता है। 1945 में हुए साम्प्रदायिक दंगे उसी का परिणाम है। देश की जनता के प्रति अमानुषिक व्यवहार किया गया। जीवन–व्यवहार के साधन छीन गये थे। कवि महेन्द्र भटनागर 'प्रतिकूलता' कविता में तत्कालीन परिवेश का चित्रण करते दिखायी देते हैं :

''मिलती प्रति पग पर असफलता

बढ़ती जाती व्याकुलता,

जीवन–सुख के सब द्वार बंद

स्नेह हीन जीवन–दीपक की

होती जाती है ज्योति मंद !''

समाज में, उस समय जड़ता और अंधविश्वास ने अपने पाँव जमा दिये थे। व्यक्ति–व्यक्ति के बीच प्रेम और सहानुभूति का अभाव था। यथा – 'जड़ता का अंधियारा छाया, बरखा–आँधी का युग आया।'

1941 से आजादी तक का समय, सामाजिक जड़ता से भरा मिलता है। जड़–मान्यताओं ने अपनी मजबूत पकड़ बना ली थी। सर्वत्र संघर्ष व्याप्त था प्रेम का माहौल विरल था। डॉ. महेन्द्र भटनागर ऐसे ही माहौल का चित्रण करते हैं :

''जड़ता का अंधियारा छाया,

बरखा आँधी का युग आया।''

डॉ. महेन्द्र भटनागर ने, स्वतंत्र भारत के सामाजिक परिवेश को भी यथासंभव चित्रित किया है। स्वतंत्रता के पश्चात् भी व्यक्ति अभाव और जीवन की विडम्बनाओं से लड़ता रहा। महेन्द्र भटनागर तत्कालीन परिवेश के परिप्रेक्ष्य में कहते हैं :

'आवश्यकताएँ हैं :

पर पूर्तियाँ नहीं अर्चनाएँ हैं :

भटकने हैं, बाट नहीं। नदियाँ हैं :

घाट नहीं। सर्वत्र तलाश–ही–तलाश है।'

कवि महेन्द्र भटनागर यहाँ प्रजातंत्र की विकृति प्रस्तुत करते हैं। 'और क्या कथनीय है' कहकर तीखा व्यंग्य व्यक्त करते हैं। कवि समाज के प्रत्येक पहलू से जैसे साक्षात्कार करता हुआ चलता है।

स्वतंत्र भारत की एक अन्य प्रमुख समस्या थी छूताछूत और वर्ण। उच्च–नीच का भेदभाव। गाँधीजी के 'हरिजन' उत्थान कार्यों से, अछूत जाग्रत हुआ और अपने अधिकार को समझने लगा। कवि 'हरिजन' कविता में तत्कालीन हरिजन–जागरण की स्थिति का अंकन करते हुए कहते हैं।

समाज में हर व्यक्ति अपना स्वतंत्र अस्तित्व लेकर जीता और बढ़ता है। हर व्यक्ति हर कार्य करने के लिए सक्षम नहीं होता। तब दूसरे व्यक्ति को कुछ दाम देकर वह अपना कार्य पूरा करवाता है। यह दाम लेकर कार्य करने वाले व्यक्ति की पहचान 'मजदूर' से होती है। स्वतंत्र भारत में आम आदमी की हालत कुछ मजदूर जैसी ही थी। कवि महेन्द्र भटनागर मजदूरों की परिस्थिति का वर्णन करते हुए लिखते हैं :

श्रमिकों की दुनिया बहुत बड़ी !

सागर की लहरों से लेकर

अम्बर तक फैली !

निष्कर्षत : कहें तो महेन्द्र भटनागर का सामाजिक परिवेश विखण्डन और सर्जन – दोनों का संक्रांति–काल जैसा है। व्यक्ति जहाँ अपने अधिकार के लिए जाग्रत हो रहा था, वहीं दूसरी ओर अपने सांस्कृतिक मूल्यों को भूलता जा रहा था। अपने समग्र परिवेश कवि महेन्द्र भटनागर अफ़सोस व्यक्त करते हैं :

''अफसोस है, अफसोस है !

उजड़ा हुआ संसार है,

रोदन यहाँ हर द्वार है,

बिगड़ा हुआ, पीड़ित, दुखी, मिटता हुआ समुदाय है !

अफसोस है, अफसोस है !

भीषण क्षुधा की ज्वाल है,

सूखी जगत की डाल है,

अम्बर–अपनी में गूँजता बस एक ही स्वर, 'हाय है' !

अफसोस है, अफसोस है !

नीरस मनुज का गान है,

झूठा लिए अभिमान है

गतिहीन जीवन है जटिल, असहाय है, निरूपाय है !

अफसोस है, अफसोस है !''

साहित्यिक परिवेश :

आधुनिक हिन्दी कविता का प्रारम्भ भारतेन्दु युग से माना जाता है। ''आधुनिक हिन्दी साहित्य पर फ्रॉयड, एडलर और युंग का काफी प्रभाव है। स्वानुभूतिपरक कविता की ए लम्बी परम्परा है। जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय तथा नयी कविता, नयी कहानी के अनेक ऐसे हस्ताक्षर है। मनोविश्लेषण के अतिरिक्त मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद, शैली विज्ञान, संरचनावाद का भी काफी प्रभाव है। आधुनिक हिन्दी कविता पूर्व से अधिक, पश्चिम से प्रभाव ग्रहण करती है। प्रभावग्रहण की यह प्रक्रिया आयातित व आरोपित है। प्रगतिवाद पर भी यह आरोप है।''

आधुनिक युग पूँजीवाद का है। रूस, चीन, विएतनाम जैसे देशों में पूँजीवाद के खिलाफ समाजवाद आया। 1917 की रूसी राज–क्रांति ने समाजवाद को पृथ्वी पर संभव किया। भारतीय स्वाधीनता–संग्राम को रूस के समाजवादी विप्लव से काफी बल मिला था।

'समाजवादी विप्लव ने राजनीति के साथ–साथ समाजार्थिक संरचना, कला–साहित्य, संस्कृति को भी प्रभावित किया था।''

भक्ति आंदोलन के बाद भारत के सांस्कृतिक इतिहास में यह सबसे बड़ा आन्दोलन था। प्रेमचन्द ने साहित्यकारों से कहा था कि उनकी सच्ची अदालत जनता है। साहित्यकार को मानवता, सज्जनता, न्याय और अधिकार का निर्भय होकर समर्थन करना चाहिए। प्रेमचन्द के अनुसार साहित्य राजनीति का पिछलाग्गू नहीं, बल्कि राजनीति के आगे चलने वाली मशाल है। प्रेमचन्द

ने अपने लेखन के द्वारा इसे प्रमाणित किया। उन्होंने साहित्य की इस मशाल का नेतृत्व किया।

कवि महेन्द्र भटनागर युग–कवि हैं। उन्होंने अपनी अग्रज पीढ़ी की कविता से आगे निकलकर कविता को जनवाणी बनाया। ''प्रगतिशील कविता, चूँकि, युगबोध और विचारों के प्रति अधिक आग्रहशील रही, इसलिए अपने प्रारंभिक काल में अवश्य ही वह शिल्प को अधिक सँवारने में असमर्थ रही लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि सन् 1936 तक आते–आते छायावादी कला भी अपनी अत्यधिक अंतर्मुखी दृष्टि, वायवी कल्पना, अलंकारगत मोह और लक्षणा एवं प्रतीक–पद्धति की दुरारूढ़ व्यंजना की बोझिलता तथा एकरसता से निष्प्राण हो चली थी। सुमित्रानंदन पंत के शब्दों में ''उसके पास भविष्य के लिए नवीन आदर्शों का प्रकाश, नवीन भावनाओं का सौन्दर्य–बोध और नवीन विचारों का रस नहीं था। वह काव्य न रहकर केवल अलंकृत संगीत बन गया था।'' ऐसे समय में प्रगतिशील कला की सहज सरलता एवं अनलंकृति एकरसता के घेरे को तोड़कर जन–मानस में नवीनरस की हिल्लोल जगा सकने में समर्थ हुई। मिट्टी की महक से परिपूर्ण अनेक ऐसे बिम्बों की सृष्टि प्रगतिशील कवि ने की जो अपनी मूर्ति–मॉसलता और युग वास्तव से जुड़ी स्वाभाविकता के कारण उस समय के पाठक को सहज ग्राह्म हो सके। कवि महेन्द्र भटनागर की 'संध्या के पहले तारे से' शीर्षक कविता में ऐसे अनलंकृत बिम्ब का उदाहरण मिलता है :

'शून्य नभ में है चमकता आज क्यों बस एक तारा ?

जबकि क्षण–क्षण पर प्रगतिकर रात आती जा रही है,

चन्द्र की हँसती कला भी ज्योति क्रमशः पा रही है,

हो गया है जब तिमिरमय विश्व का कण–कण हमारा !'

साहित्य कला के बारे में आधुनिक विचार पुराने विचारों से मेल नहीं खाते। साहित्य के प्रतिमान बदल गये हैं। फलतः कवि–कर्म जटिल व कठिन हो गया है। मीडिया के प्रभाव से राष्ट्रों के बीच की दूरी समाप्त हो गयी है। फलतः कवि की चेतना व्यक्तिगत न होकर वैश्विक हो गई है। यही आज के वैज्ञानिक युग की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

कवि महेन्द्र भटनागर प्रगतिवाद के द्वितीय उत्थान के कवि हैं। उनकी प्रारम्भिक कविताओं का मूल उत्स प्रकृति है। लेकिन प्रकृति–चित्रण से ही बँधे नहीं रहे। बारह वर्ष की उम्र से कविता लिखने वाले कवि महेन्द्र भटनागर की प्रथम प्रकाशित कविता 'हुंकार' है जिसे श्री मोहन सिंह सेंगर ने 'विशाल भारत' के मार्च 1944 के अंक में 'महेन्द्र' के नाम से छापा था।

महेन्द्र भटनागर की कविता सामयिकता में डूबी हुई है। वे एक ऐसी जागरूक सहृदयता का परिचय देते हैं जो अशिव और असुन्दर के दर्शन से सिहर उठती है तो जीवन की नयी कोपलें फूटते देखकर उल्लसित भी हो उठती है।

कवि के पास अपने भावों के लिए शब्द हैं, छंद हैं, अलंकार हैं। उनके विकास की दिशा यथार्थ जीवन का चितेरा बनने की ओर है। साम्प्रदायिक–द्वेष, शासक वर्ग के दमन, जनता के शोक और क्षोभ के बीच सुन पड़ने वाली कवि की इस वाणी का स्वागत –

जो गिरती दीवारों पर नूतन जग का सृजन करे

वह जनवाणी है !

वह युगवाणी है !

01. 'हिन्दुस्तानी शब्दकोश', डॉ. अम्बाशंकर नागर, पृ. 339

02. संस्कृत आलोचना, बलदेव उपाध्याय, पृ. 134

03. महेन्द्र भटनागर समग्र खण्ड–1, पृ. 3–4

04. वहीं, पृ. 3–4

05. 'हिन्दुस्तानी शब्दकोश', सं. डॉ. अम्बाशंकर नागर, पृ. 405

06. डॉ. महेन्द्र भटनागर समग्र खण्ड–1, पृ. 9

07. डॉ. महेन्द्र भटनागर समग्र खण्ड–1, पृ. 10

08. वहीं, भाग–5, पृ. 401

09. वहीं, पृ. 404

10. वहीं, पृ. 405

11. महेन्द्र भटनागर समग्र खण्ड–1, पृ. 11

12. भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन एवं स्वतंत्रता संघर्ष 1857–1947, एम.एल.घवन, पृ. 45

13. वहीं, पृ. 49

14. 'भारत का मुक्ति संग्राम', एस.एल. नागोरी, जीतेश नागोरी, पृ. 43

15. वहीं, पृ. 33

16. वहीं, पृ. 39–40

17. 'आजादी के पचास साल' !, विश्वप्रकाश गुप्त, मोहिनी गुप्त, पृ. 120

18. वहीं, पृ. 127

19. 'आजादी के पचास साल', भाग–1, पृ. 129

20. वहीं, पृ. 130

21. प्रगतिवाद कवि महेन्द्र भटनागर अनुभूति और अभिव्यक्ति, डॉ. माधुरी शुक्ला, पृ. 14

22. 'आजादी के पचास साल', भाग–1, पृ. 135

23. वहीं, पृ. 140

24. 'भारतीय इतिहास कोश', सच्चिदानंद भट्टाचार्य, पृ. 525

25. भारतीय स्वातंत्र्य–संग्राम तेज और तवारीख, कोंग्रेस–ऐतिहासिक भूमिका–विचारधारा, हरिहर खंभोकजा, पृ. 236

26. 'भारतीय इतिहास कोश', सच्चिदानंद भट्टाचार्य, पृ. 526

27. वहीं, पृ. 526